Date
26-04-2020

B.Ed-II

Sub - "Work Education Gandhiji's Nai Talim & Community Engagement"

ड्यूवी का नई तालीम प्रतिमान ⇒ आधुनिक युग के महान् दार्शनिकों में जॉन ड्यूवी का स्थान सर्वोच्च श्रेणी में गिना जाता है। वास्तव में शिक्षा और दर्शन के क्षेत्र में इनका योगदान अतुलनीय है। ड्यूवी पूर्व निर्धारित निरपेक्ष 'सत्यों' तथा 'मूल्यों' के अस्तित्व में विश्वास नहीं करता है। उनका मानना था कि सत्य तथा मूल्य समय, स्थान एवं व्यक्ति के साथ बदलते रहे हैं। उनके अनुसार सत्य वही है जो व्यवहारिक तथा उपयोगी है जो वस्तु वास्तविक समस्याओं के हल करने के काम आ सकती है तथा समाज एवं व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध होता है वही सत्य है। इसलिए सत्य परिवर्तनशील है। ड्यूवी के अनुसार मनुष्य को अपनी बुद्धि व क्रियात्मक शक्तियों के द्वारा इन मूल्यों का निर्माण स्वयं करना चाहिए। मनुष्य जो कुछ, जहाँ कहीं और जब कभी अनुभव करता है उन्हीं के आधार पर सत्य बनते हैं। अतः ड्यूवी उन अनुभवों को ही वास्तविक मानता है, जिसको मनुष्य अपने सामाजिक तथा भौतिक वातावरण से प्राप्त करता है। उसके अनुभवों से ही सच्चा ज्ञान प्राप्त होता है। जॉन ड्यूवी दैवीय शक्तियों में विश्वास नहीं करता है।

ड्यूवी ने मनुष्य के विकास के लिए सामाजिक वातावरण को महत्वपूर्ण बताया है उसका कहना है कि समाज में रहकर ही मनुष्य के व्यक्तित्व संभव है। समाज से दूर रहकर उसका विकास संभव नहीं है।

Scanned with CamScanner

ड्यूवी के शिक्षा दर्शन के आधारभूत सिद्धांत →

I. शिक्षा स्वंय जीवन है = ड्यूवी के अनुसार शिक्षा के अभाव मानव का सर्वांगीण विकास नहीं हो सकता है। व्यक्ति का वर्तमान, भविष्य सभी शिक्षा से ही निर्मित हो सकता है। अतः शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो बालक की भिन्न अवस्थाओं की पूर्ति करे। इसलिए उन्होंने प्रयोगात्मक विद्यालय की स्थापना का प्रयास किया।

II. शिक्षा अनुभवों के पुनर्निर्माण की प्रक्रिया है →

III शिक्षा सामाजिक प्रक्रिया है =

IV. शिक्षा विकास की प्रक्रिया है

V. शिक्षा के दो पक्ष हैं → ड्यूवी के अनुसार शिक्षा प्रक्रिया के दो अंग हैं →

I मनोविज्ञान - II समाज।

Scanned with CamScanner